कुन्तो: सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के विघटन को चित्रित करता उपन्यास

Pavan Kumar Meena, Assistant Professor, Hindi, Government College, Kanwas, Kota E-mail: - pavanjrd@gmail.com

शोधसार

उपन्यास मानव जीवन का समग्र मूल्यांकन करने की एक श्रेष्ठ विधा है। हिन्दी साहित्य में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण करने वाले अनेक उपन्यासों का सृजन हुआ है। ऐसा ही भीष्म साहनी द्वारा लिखित उपन्यास है- कुन्तो, जिसमें भारतीय सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के विघटन को चित्रित किया गया है। भारतीय संस्कृति में रिश्तों-नातों को बहुत उच्च स्थान दिया गया है। हमारी संस्कृति में भाई-बहन का रिश्ता सबसे पवित्र रिश्ता माना जाता है परन्तु कुन्तो उपन्यास में जयदेव की माँ उसका विवाह उसकी मौसेरी बहन से करवाने की बात कहकर इस पवित्र संबंध को खंडित करने पर आमादा है। यह हमारी संस्कृति के विघटन का ज्वलंत उदाहरण है। जयदेव एवं कुन्तो वर्तमान पीढ़ी के प्रतीक है जो खुलेआम मालगाड़ी में बैठकर गले मिलते हैं, एक-दूसरे का चुम्बन लेते हैं। इस प्रकार ये दोनों पश्चिमी संस्कृति को अपनाकर भारतीय संस्कृति एवं नैतिकता का खुला उल्लंघन करते हैं। धनराज विदेशी संस्कृति से प्रभावित होकर भारतीय दाम्पत्य जीवन की गरिमा को ध्वस्त करता हुआ दृष्टिगोचर होता है। हमारी संस्कृति में दाम्पत्य जीवन आपसी विश्वास, अपनत्व भावना और आपसी सहयोग पर आश्रित है परन्तु गिरीश अपनी पत्नी सुषमा से अजनबी जैसा कठोर व रूखा व्यवहार करके कहता है कि आप हमें कहीं भी जाने से नहीं रोकेंगी और हम आपको नहीं रोकेंगे। इस प्रकार वह स्वच्छंदता अपनाकर हमारी सांस्कृतिकता व नैतिकता पर प्रहार करता है। भारतीय संस्कृति में वृद्धजन संस्कृति के रक्षक माने जाते हैं परन्तु कुन्तो उपन्यास में चाचा मंगतराम नंगे बदन, नाचता, गाता और निर्लज्जतापूर्ण बातें करता है। रामनाथ का ताऊ अश्लील कहानियाँ सुनाता है एवं सभी बूढ़े व्यक्ति बेशर्म बनकर हँसते हैं। इस प्रकार लेखक वर्तमान समय में हो रहे नैतिक मूल्यों के विघटन को प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति में पत्नी को अर्धांगिनी माना गया है परन्तु धनराज अपनी पत्नी को आग में जलते देखकर संतुष्ट व आनन्दित होता है, तो हमारे सांस्कृतिक व नैतिक मूल्य खण्ड-खण्ड होकर बिखर जाते हैं। भारतीय समाज में मदिरापान अनैतिक कार्य माना गया है लेकिन धनराज मद्यपान करके कभी हँसता है, कभी रोता है, कभी गन्दी-गन्दी गालियाँ बकता है, कभी बड़बड़ाने लगता है। इस प्रकार वह अनैतिक व असभ्य आचरण करके निकृष्टता प्रदर्शित करता है। दाम्पत्य जीवन का आधार प्रेम, समर्पण व आपसी विश्वास होता है परन्तु जयदेव कुन्तो के रिश्ते में एक ओर कुन्तो पूर्ण समर्पित है तो जयदेव पूर्णतः बे-परवाह। कुन्तो आदर्श भारतीय नारी है और केवल जयदेव को प्रेम करती है जबकि जयदेव कुन्तो को धोखा देता है, सुषमा के प्रति आसक्त रहता है। जयदेव भारतीय संस्कृति व नैतिक मूल्यों का हनन करता है। प्रोफेसर साहब का बड़ा भाई दौलत के बल पर देह-व्यापार (वेश्यावृत्ति) की घृणित मानसिकता को प्रकट करने वाला व विदेशी संस्कृति का परिचायक है, जो भारतीय मूल्यों को विघटित करता है। पति का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह अपनी पत्नी को प्रेम व सम्मान प्रदान करें परन्तु धनराज अपनी पत्नी थुलथुल को डराता, धमकाता एवं पीटता है। इस प्रकार का कृत्य अनैतिकता का परिचायक है। विघटित होते सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का उदाहरण तब मिलता है, जब सुबह लालाजी का पड़ोसी उनकी रक्षा करने का वचन देता है और उसी दिन शाम को उनके दरवाजे का ताला तोड़कर लूटपाट मचाता है एवं घर पर कब्जा कर लेता है। एक सच्ची, समर्पित प्रेमिका कुन्तो मरणासन्न स्थिति में होकर भी अपने पति जयदेव को देखना चाहती है और जयदेव अपनी पत्नी को मरते हुए देखकर भी सुषमा के प्रति आसक्ति रखता है। जयदेव भारतीय सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों को विघटित करने वाले व्यक्ति के रूप में सामने आता है। वह आधुनिक पीढ़ी की मूल्यहीनता और बदलते सांस्कृतिक स्वरूप का परिचायक है।